प्रकाशन : 4/2015

बतख पालन

प्रो. (डॉ.) बसन्त बैस
डॉ. सी. एस. ढाका

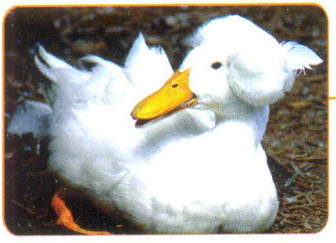

RAJASTHAN UNIVERSITY OF VETERINARY AND ANIMAL SCIENCES
राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIKANER

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।

विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपनाकर कृषि आय बढ़ाने के लिए प्रेरणा हेतु सजीव प्रदर्शन नमूनों की स्थापना

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

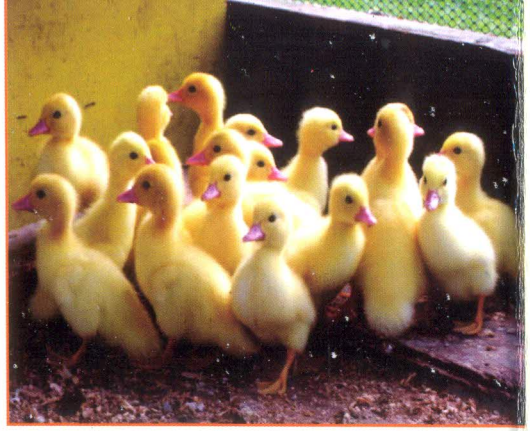

बतख स्वभाव से जलीय पक्षी है भारत में मुर्गी पालन के बाद बतख अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह कुल कुक्कुट जनसंख्या में 10 प्रतिशत और कुल कुक्कुट अण्डा उत्पादन में 6–7 प्रतिशत हिस्सा रखती है। यह छोटे तालाबों और झीलों में एक पालतू पक्षी की तरह पाली जाती है। यह एक अच्छा अण्डा उत्पादक भी है। इसके अण्डे आकार में बड़े तथा इनमें वसा की मात्रा मुर्गियों के अण्डे से ज्यादा होती है। बतख की कुछ नस्लें अच्छा अण्डा देने के लिये जानी जाती है जैसे की खाकी, कैम्पबेल नस्ल एक वर्ष में 300 से ज्यादा अण्डे देती है।

बतख पालन के लाभः- बतख को मुर्गियों एवम् अन्य कुक्कुटों की तुलना में विस्तृत आवास की आवश्यकता नहीं होती है। यह मुर्गियों से लगभग 40–50 अण्डे ज्यादा देती है। सामान्यतः बतख के अण्डे का वजन 65 से 70 ग्राम होता है। बतख का अण्डा मुर्गियों के अण्डे से बड़ा होता है। इनके अण्डे थोड़े से दृढ़ और कई पक्षीय रोगों के प्रति प्रतिरोधक होते है। बतखों में मुर्गियों की तरह निष्ठुरता व प्रतिरोधात्मक व्यवहार सामान्यतया नहीं पाया जाता है। अण्डे के अधिक भार के कारण इसमें एक मुर्गी के अण्डे से ज्यादा पोषक तत्व पाये जाते है। बतख एकीकृत खेती प्रणाली सबसे उपयुक्त है क्योंकि इन्हें मछलियों के साथ भी रखा जा सकता है। मुर्गियों की तरह बतख बीमारियों व परजीवियों के प्रति संवेदनशील नहीं होती अर्थात् इनमें इनके प्रति प्रतिरोधकता पायी जाती है।

बतखों में लिंग निर्धारणः- अण्डे से निकलने के बाद बतखों में लिंगनिर्धारण मुर्गियों की अपेक्षा अधिक सरल होता है। नवजात बतख का लिंग निर्धारण उसे आकार, वेन्ट व प्लूमेज के द्वारा किया जाता हैं

बतखों की नस्ल :- सामान्यतया बतख की नस्लों की तीन श्रेणियाँ पायी जाती है,

(1) अण्डे देने वाली नस्ल खाकी, कैम्पबेल, इंडियन रनर

(2) माँस देने वाली नस्ल व्हाइट पैकिन, मस्कॉवी, एलिस्बरी

(3) आभूषण में काम आने वाली नस्ल क्रीस्टेड व्हाइट

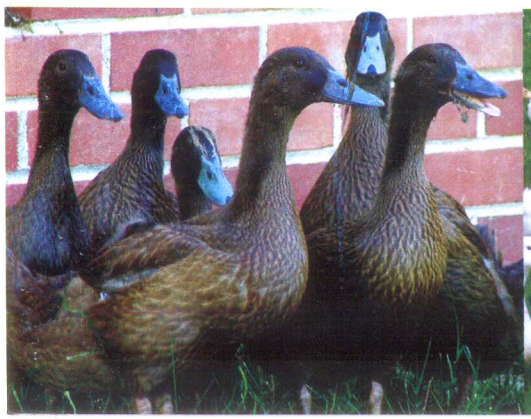

बतखों का आवास एवम् सामान्य प्रबंधनः-

बतखों का आवास सामान्यतया ऊँचाई, अच्छे निकास वाले क्षेत्रों पर स्थित होना चाहिये। छायादार स्थान के फर्श पर बिछावन जैसे भूसा, या फिर उसके जैसे सूखे, सोखने वाले वस्तुओ का प्रयोग करना चाहिए। बतख के पहचान के तरीकों में पैर वेब को काटना, पंखों को रंगना, टॉय में छेद करना और विंग को काटना आदि शामिल है। बतखों के व्यवसायिक आवास सामान्यतया दो प्रकार के होते है–

(1) पूर्ण परिरोध वाले

(2) अर्द्ध परिरोध वाले

बतखों के आधुनिक व्यवसायिक पूर्ण परिरोध आवास एक अच्छे वायुवीय निकास वाले होते है। बतखों को उनकी भिन्न आयु के आधार पर समूहों में, अलग–अलग भवनों में रखा जाता है जिनमें दो कमरो के बीच में दृढपृथ्थकरण होता है इन आवासों में फर्श दो प्रकार के होते है। जैसे–तारों के जाल वाले और लिटर व तारों के जाल से बनी, जिसमें पानी पीने के लिये पानी के बर्तन तारों पर स्थित रहते है। बतखों की अण्डे उत्पादन की क्षमता का नियमन दिन के प्रकाश की लम्बाई से होता है, बतखों के बड़े व्यवसायिक आवासों में प्रकाशीय कार्यक्रमों जैसे प्राकृतिक डे–लाइट और कृत्रिम–प्रकाश के सहयोग से अण्डों के उत्पादन व प्रजनन को प्रभावित किया जाता है। सर्दी के दिनों में पाँच मादा बतखों के लिये एक नर बतख (ड्रेक) व गर्मी के मौसम में एक ड्रेक के साथ आठ मादा बतख रखी जा सकती है। ड्रेक का निर्धारण उसके बडे आकार, ऊँची तारकता की आवाज आदि से किया जाता है।

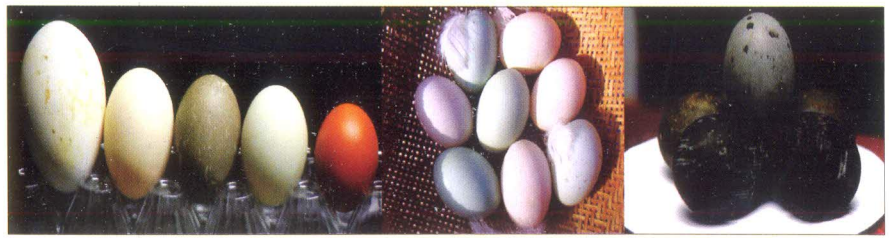

बतख के आवास के लिये जगह की आवश्यकता

उम्र सप्ताह में	प्रत्येक नवजात के लिए जगह		खाने के लिए जगह		पीने के पानी के लिए जगह	
	वर्ग सेन्टीमीटर	(वर्ग फीट)	सेन्टीमीटर	ईन्च	मिलीमीटर	ईन्च
1 से 2	900	(1.00)	2.5	(1.0)	12	(0.5)
2 से 3	1350	(1.50)	2.5	(1.0)	12	(0.5)
3 से 4	1800	(2.00)	3.7	(1.5)	25	(1.0)
4 से 5	2250	(2.50)	5.0	(2.0)	25	(1.0)
5 से 8	2700	(3.00)	5.0	(2.0)	25	(1.0)
8 से अधिक	4500	(5.00)	7.5	(3.0)	37	(1.5)

भोजन :- नवजात बतखों को सबसे पहले ब्रुडर हाऊस में रखा जाता है। इन बतखों के भोजन की शुरूआत 2 सप्ताह की उम्र में 18 प्रतिशत प्रोटीन के साथ की जाती है एवम् 5 सप्ताह की होने पर 16 प्रतिशत प्रोटीन दी जाती है। एक प्रजनन करने वाली बतख के भोजन में लगभग 16 प्रतिशत प्रोटीन व 2 प्रतिशत कैल्शियम होता है। बतखों के लिये लटकने वाले खाने के बर्तन उपयोग में लाये जाते है। नवजात बतखों को रात में खाने व पीने के लिये प्रकाश की आवश्यकता होती है। वयस्क बतख बहुत ही निराशात्मक प्रकृति के होते है और जल्दी ही घबरा जाती है। इसलिये उन्हें अंधेरे में प्रकाश की बहुत आवश्यकता होती है।

व्यवसाय/मार्केटिंग :- अधिकतर बतखों की मार्केटिंग 7–8 सप्ताह की उम्र में की जाती है। पैकिन, जो कि एक अच्छे स्ट्रेन की बतख है का वजन जब 2.5–2.9 किलोग्राम हो जाता है और इसके पिन फैद्रस भी इस उम्र में मुक्त हो जाते है। माँस प्राप्त करने के लिये बतखों की स्कैलडिंग 60° सेल्शियस पर की जाती है जैसा कि मुर्गियों में किया जाता है।

प्रबंधन के कारण बतखों में होने वाली परेशानियाँ :- बतखों में सामान्यतया अस्थायी रूप से पानी की कमी से हो जाने वाली परेशानियों को स्टेगरस कहते है। नवजात बतखों को ठण्डा पानी पिलाना घातक होता है। नवजात बतख भोजन खाने के बाद सूर्य की गर्मी सहन नहीं कर सकती। कैनाबेल्जिम को रोकने के लिये इनको चोंच रहित (डिबिकिंग) किया जाता है, यह परेशानी अनुपयुक्त प्रबंधन और प्रजनन के कारण आनुवांशिक कमजोरी होने से होती है।

-: तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार :-

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत, कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. बी. के. बेनीवाल, अधिष्ठाता
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

प्रो. एस. सी. गोस्वामी, विभागाध्यक्ष
पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

-:: सम्पर्क सूत्र ::-

प्रो. बसंत बैस
डॉ. सी. एस. ढाका
9414328437
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग
सी.वी.ए.एस.
राजूवास, बीकानेर

Under CSA-RKVY-1(15) Project

Establishment of Live Demonstration Models of Diversified Livestock Production Systems For Motivating Adaption To Enhancing Agricultural Income

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819